विचार बिन्दु

गुरु का भी दोष कह देना चाहिए। –स्वामी रामतीर्थ

बैन और बहिष्कार- बेमानी, बेअसर

भारत सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर द्वारा हाल ही में यह बयान दिया गया कि बॉयकॉट या बहिष्कार माहौल को खराब करने का काम करते हैं।

यह बात उन्होंने कुछ हिंदू संगठनों के द्वारा फिल्म 'पठान' का विरोध करते हुए इसका बहिष्कार करने के सन्दर्भ में कही । कभी-कभी, सही बात भी सत्ताधारी दल के नेताओं के मुंह से निकल जाती है। यह उसी का उदाहरण है। इस बयान हेतु अनुराग ठाकुर को बहुत-बहुत धन्यवाद कि उन्होंने जनता के मन की बात कह दी है, चाहे वह अनजाने में ही कही हो । यह बयान कितना सच है, यह कुछ उदाहरणों से स्पष्ट हो जाएगा।

'पठान' फिल्म का विरोध कई हिंदूवादी संगठनों द्वारा इस आधार पर किया गया कि इसमें दीपिका पादुकोण ने केसरिया रंग की बिकनी पहन कर अश्लील डांस किया, जिससे हिन्दुओं की भावना आहत हुई है। यह उल्लेखनीय है कि इस फिल्म के नायक शाहरुख खान हैं जो अपने बेबाक बयानों के लिए पहले भी विवादों में आ चुके हैं।

यह उल्लेखनीय है कि किसी भी फिल्म को प्रदर्शन हेतु प्रमाणित करने की जिम्मेदारी, सेंसर बोर्ड या प्रमाणीकरण बोर्ड को दी गई है। इसके लिए विस्तृत दिशा-निर्देश भी जारी किए हुए हैं कि फिल्म में क्या दिखाया जा सकता है और क्या नहीं। आपत्ति होने पर कुछ दृश्यों को हटाने के लिए निर्माता को कहा जाता है। सेंसर बोर्ड के निर्देशों की पालना करने के बाद फिल्म के प्रदर्शन की अनुमति दी जाती है। सेंसर बोर्ड, कई फ़िल्मों को अप्रतिबंधित प्रदर्शन की अनुमति देता है और कुछ को केवल वयस्कों को दिखाने हेतु प्रमाणित करता है। पहली श्रेणी की फ़िल्मों को 'U' और दूसरी श्रेणी की फ़िल्मों को 'A' प्रमाण पत्र दिया जाता है।

कई साधु-संतों और विश्व हिंदू परिषद एवं भाजपा के नेताओं ने इस फिल्म के बॉयकॉट का आव्हान किया और यह कहा कि इस फिल्म को फ्लॉप करके ही शाहरुख खान को सबक सिखाया जा सकता है। कुछ व्यक्तियों द्वारा इस बात का भी आव्हान किया गया कि यदि कोई सिनेमाघर इस फिल्म को दिखाए तो उसे जला दिया जाय।

हमारा समाज कितना असहिष्णु हो गया है कि, हम केवल रंग के आधार पर यह तय करने लगे हैं कि कौन सा रंग, किस धर्म से जुड़ा हुआ है? केसरिया रंग के कपड़े शरीर के विभिन्न भागों पर सदैव पहने जाते रहे हैं और आज तक इस पर किसी प्रकार का विवाद नहीं हुआ। बहिष्कार की धमकी भरी चेतावनियों के बावजूद, जब फिल्म रिलीज हुई तो इसने पहले तीन दिनों में ही 300 करोड़ रुपए की कमाई कर ली, जो अब तक का रिकॉर्ड है। स्पष्ट है, इस फिल्म को अधिसंख्य हिन्दू समुदाय ने भी बड़ी संख्या में देखा है । सही बात तो यह है कि फिल्म के निर्माता को उन व्यक्तियों के प्रति आभार व्यक्त करना चाहिए, जिन्होंने इस फिल्म के बहिष्कार करने का आव्हान करके उनकी फिल्म की लोकप्रियता में कई गुणा वृद्धि कर दी।

कुछ इसी प्रकार की कार्रवाई फिल्म 'पद्मावत' के समय भी हुई थी, जब कई स्वयंभू संगठनों ने फिल्म के बनने के दौरान ही फिल्म निर्माता संजय लीला भंसाली के साथ मारपीट की और उनके मुँह पर कालिख पोत दी। करणी सेना ने कई स्थानों पर हिंसक प्रदर्शन भी किए। यह भी तब जबकि इसे सेंसर बोर्ड द्वारा प्रमाणित कर दिया गया था। यदि भीड़ के बल पर फिल्मों का प्रदर्शन किया या रोका जाएगा जाएगा तो फिर भारत सरकार द्वारा गठित विभिन्न संस्थाओं और संस्थानों का औचित्य ही समाप्त हो जाएगा।

'पठान' के बहिष्कार की अपील बिल्कुल बेअसर सिद्ध हुई। यही नहीं, इसे कहीं अधिक लोगों ने देखा। यदि कोई विवाद खड़ा नहीं किया गया होता और इसके विरोध स्वरूप कई बड़े नेताओं ने बयान नहीं दिए होते, तो संभवतया, यह फिल्म उतनी कमाई नहीं करती, जितनी यह कर पाई है।

मजे की बात यह है कि कि प्रतिबंध से पहले जहां एक माह में इस चित्र को कुल 6 लोगों ने डाउनलोड किया था वहीं प्रतिबंध लगने के बाद एक माह में 420000 लोगों ने इसे डाउनलोड किया। स्पष्ट है, जिस उद्देश्य के लिए सरकार प्रतिबंध लगाती है अथवा समाज के कुछ वर्गों द्वारा बहिष्कार का कोई आव्हान किया जाता है, वास्तविकता में यह प्रतिबंध या बहिष्कार के उद्देश्य के विपरीत ही कार्य करता है।

लगभग यही स्थिति, सरकार द्वारा लगाए गए 'बैन' यानि प्रतिबंधों की है। जब भी सरकार किसी पुस्तक, व्यक्ति या गतिविधि को बैन करती है, तो मान कर चलिए कि उसे सामान्य से अधिक लोग पढ़ेंगे और अधिक लोग उस गतिविधि में भाग लेंगे। आज के तकनीक के युग में जहां संचार क्रांति ने अद्भुत प्रगति की है, किसी प्रकार के प्रतिबंध को प्रभावी रूप से लागू करना संभव ही नहीं है। आज आप इन्टरनेट के माध्यम से दुनिया के किसी कोने की घटना के बारे में जानकारी पलक झपकते ही प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे वातावरण में सरकार की पूरी मशीनरी के बावजूद प्रतिबंध लागू नहीं किया जा सकता, तो फिर समाज के कुछ स्वघोषित ठेकेदारों द्वारा किसी भी प्रकार का बहिष्कार कोई मायने नहीं रखता।

तथाकथित राष्ट्रवादियों ने चीन से सीमा विवाद के समय चीनी वस्तुओं का बहिष्कार करने का आव्हान बड़े जोर-शोर से किया और यह सोचकर किया कि इससे चीन की आर्थिक स्थिति कमजोर होगी । इस हेतु सोशल मीडिया पर असंख्य संदेश भी प्रसारित किए गए किन्तु किसी का कोई असर नहीं हुआ और लोग चीन में बनी हुई वस्तुएं वैसे ही खरीदते रहे। इसके विपरीत, चीन से होने वाला आयात पहले से भी बढ़ गया। इसका अर्थ यही हुआ कि सरकारों और समाज के ठेकेदारों को यह समझना होगा कि जब भी किसी प्रकार के काम को करने से लोगों को रोका जाएगा, वह उसे बदले की भावना से कहीं अधिक करेंगे। मानव स्वभाव, विशेषकर युवाओं का स्वभाव प्रतिबंध को नहीं मानने का है। कहा जाता है, मानव जाति का प्रारंभ ही एडम और ईव द्वारा वर्जित फल को खाने से हुआ। इस प्रकार की प्रवृत्ति को एक 'स्ट्राइसेंड इफेक्ट' के नाम से जाना जाता है। एक अमेरिकी अभिनेत्री स्ट्राइसेंड के निजी आवास का चित्र किसी ने इंटरनेट पर डाल दिया, तो उसने इसे निजता का हनन मानते हुए इसके विरुद्ध कार्रवाई की और इस पर रोक लगाई गई। मजे की बात यह है कि कि प्रतिबंध से पहले जहां एक माह में इस चित्र को कुल 6 लोगों ने डाउनलोड किया था वहीं प्रतिबंध लगने के बाद एक माह में 420000 लोगों ने इसे डाउनलोड किया। स्पष्ट है, जिस उद्देश्य के लिए सरकार प्रतिबंध लगाती है अथवा समाज के कुछ वर्गों द्वारा बहिष्कार का कोई आव्हान किया जाता है, वास्तविकता में यह प्रतिबंध या बहिष्कार के उद्देश्य के विपरीत ही कार्य करता है।

ऐसा ही कुछ, हाल ही में बीबीसी की डॉक्यूमेंट्री 'इंडिया : दी मोदी क्वेश्चन' पर भारत सरकार द्वारा लगाए गए बैन के संबंध में देखने में आया। जब से प्रतिबंध लगाया है तब से विभिन्न तकनीक के माध्यम से लोग इसको देख रहे हैं और सरकार एक प्रकार से असहाय ही बनकर रह गई है। जहां पर भी इसने कार्रवाई करने का प्रयास किया, उसका विपरीत प्रभाव पड़ा। जादवपुर विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, जेएनयू और जामिया मिलिया विश्वविद्यालय, में तो छात्रों ने इसकी सामुहिक स्क्रीनिंग भी की। इसको रोकने के लिए पुलिस द्वारा बल भी प्रयोग किया जिससे सरकार के लिए पक्ष में कोई अच्छी राय नहीं बनी। अच्छा तो यह होता कि सरकार इस फिल्म को सामान्य रूप में लेकर इसे नजरअंदाज कर देती या फिर प्रेस वार्ता करके इसका तथ्यात्मक खंडन कर देती।

पठान कोई पहली फिल्म नहीं है जिसका विरोध हुआ हो। पहले भी, 'पद्मावत', 'जोधा अकबर' आदि को राजस्थान में प्रदर्शित नहीं किया गया। विरोध, ऐतिहासिक तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर दिखाने का आरोप लगा कर किया गया। कुछ स्वयंभू, स्वघोषित समाज के ठेकेदारों ने इनका प्रदर्शन कई स्थानों पर रोकने का प्रयास किया।

यह अवश्य है कि कानून-व्यवस्था बनाए रखने के कुछ राज्यों ने इस फिल्म के प्रदर्शन पर रोक लगा दी। इसका मतलब यह नहीं कि इन राज्यों के लोगों ने इन फिल्मों को नहीं देखा। सच तो यह है कि राजस्थान में इन फ़िल्मों के प्रदर्शन पर प्रतिबंध लगने के बावजूद, कई लोगों ने पास के राज्यों में जाकर इसे देखा या फिर इंटरनेट के माध्यम से अपने घर बैठे ही देख लिया।

बैन और बहिष्कार में फर्क इतना सा है कि बैन सरकार द्वारा कानून के प्रावधानों के अंतर्गत लगाया जाता है और बहिष्कार, समाज के कुछ लोगों द्वारा कानून की अवहेलना में भीड़ एकत्रित कर किया जाता है। दोनों ही स्थितियों में लोगों को प्रभावी रूप से नहीं रोका जा सका है। अत: सरकार को यह चाहिए कि वह असुविधाजनक पुस्तकों, फ़िल्मों पर प्रतिबंध लगाने के लोभ से बाहर आए और बैन लगाने से बचे।

मौलवियों ने अलग-अलग समय पर कई प्रकार के फतवे जारी किए और देखा गया है कि किसी ने इनकी परवाह नहीं की, चाहे वे किसी दल विशेष के पक्ष में वोट देने हेतु जारी किए गए या किसी प्रकार के काम न करने हेतु। इस बारे में दो उदाहरण देना उपयुक्त होगा। कई वर्षों पूर्व सलमान रूश्दी की पुस्तक 'सैटेनिक वर्सेज' को इस्लाम विरोधी बताते हुए इस पर पूरे विश्व में प्रतिबंध लगा दिया था, किंतु इसके बाद भी यह उपलब्ध थी और इसे लोगों ने पढ़ा । इसी प्रकार, बांग्लादेश की लेखिका तस्लीमा नसरीन का भारत के मुसलमानों द्वारा विरोध करने के कारण उसे कई बार भारत में नहीं आने दिया गया। जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल भी इसी प्रकार के बहिष्कार का एवं विरोध का केंद्र एकाधिक बार रहा है।

इस प्रकार की स्थितियों से निपटने का सर्वाधिक उपयुक्त तरीका यही है कि संविधान में दी गई अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का सम्मान करते हुए न तो सरकारों द्वारा प्रतिबंध लगाने का काम किया जाए एवं न ही किसी के द्वारा बहिष्कार को बल पूर्वक लागू किया जाय। लोकतंत्र में संविधान प्रदत्त स्वतंत्र अभिव्यक्ति के अधिकार की रक्षा करना, सरकार और नागरिक दोनों का दायित्व है । बैन और बहिष्कार तो न केवल बेमानी है अपितु बेअसर भी सिद्ध हुए हैं।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

डंके की चोट पर राजस्थानी भाषा का मान रख लीजिए प्रधानमंत्री जी

राजेन्द्र जोशी

- **प्रधानमंत्री जी ने राजस्थानी में बोलने का प्रयास किया, थोड़े दिन पहले राजस्थान के आदिवासियों से संवाद किया, जिसका सीधा-सीधा लाभ गुजरात के चुनाव में उनको हुआ**
- **अब राजस्थान में भगवान देवनारायण को प्रणाम कर गुर्जरों को जोड़ने और चुनाव में लाभ लेने का भरसक प्रयास कर रहे हैं**

राजस्थान की जनता से जुड़ने का समय आ गया है। यह रुत जनता से ऋतुराज बसंत की तरह जुड़कर चुनावी साल में जुड़ाव महसूस कराने और घोषणाओं की बयार का मौसम है। ऐसी घोषणाएं जो जनता को भा सके, राजस्थान में कदम रखते ही हमारे प्रधानमंत्री जी ने राजस्थानी में बोलने का प्रयास किया, थोड़े दिन पहले राजस्थान के आदिवासियों से संवाद किया, जिसका सीधा-सीधा लाभ गुजरात के चुनाव में उनको हुआ। अब राजस्थान में भगवान देवनारायण को प्रणाम कर गुर्जरों को जोड़ने और चुनाव में लाभ लेने का भरसक प्रयास कर रहे हैं, उन्हें यह बताना चाहते हैं कि अब तक आपको कुछ भी नहीं मिला, अब मिलना शुरू होगा। प्रधानमंत्री जी को यह भी किसी ने नहीं बताया होगा कि जिन भगवान देवनारायण को आप प्रणाम कर रहे हैं उनकी भाषा का मान भी कर लीजिए। राजस्थान के गुर्जरों की अथवा आदिवासियों की सभी राजस्थानियों की भाषा राजस्थानी ही है। आप जनता से जुड़ना चाहते हैं, जनता को कुछ देना चाहते हैं उनकी जाजम पर बैठना चाहते हैं यह सब-कुछ तभी संभव होता जब आप मालासेरी में गुर्जर समुदाय के आराध्य देव देवनारायण जयंती पर उनकी भाषा का मान देते, आप जब भी गुजरात जाते हैं तब पूरा भाषण गुजराती में देते हैं और इस बार चुनावी साल में आपने आते ही राजस्थानी में बोलने का प्रयास किया जिसका हम स्वागत करते हैं। अभिनंदन करते हैं।

गुर्जरों के बीच आप पेठ बढ़ाना चाहते हैं। आपसे आग्रह है कि राजस्थानी की दो लाईनों को वोट बटोरने तक सीमित मत रखिए संवाद की भाषा को आगे बढ़ाइए प्रधानमंत्री जी। राजस्थान में रहने वाले सभी समुदायों की भाषा राजस्थानी ही है। आप डंके की चोट पर बोलते हैं तो आप डंके की चोट पर उस प्रदेश की भाषा का मान रख लीजिए जहां पर आपने तेजाजी से पाबूजी तक गोगाजी से रामदेवजी तक बप्पा रावल से महाराणा प्रताप तक यहां के महापुरुषों ,लोक देवताओं और समाज सुधारको को याद किया, आपने विजय सिंह पथिक, कोतवाल धन सिंह जुगराज सिंह, रामप्यारी गुर्जर और पन्नाधाय के शौर्य का उल्लेख किया। आपका बहुत-बहुत आभार। आपने पुरानी भूलों को सुधार करने की बात कही तो एक भूल और हो रही है इन सभी महापुरुषों की भाषा राजस्थानी ही थी उस राजस्थानी भाषा को भी आप मान देंगे तभी भूल सुधार हो सकेगी।

'सबका साथ सबका विकास' के मंत्र में राजस्थानी भाषा के विकास को भी शामिल कर लीजिए। भगवान देवनारायण राजस्थानी में सुनेंगे। राजनीति अपनी जगह है लेकिन चुनावी वर्ष में अब डंके की चोट पर वोट लेना चाहते हैं। अच्छा होगा कि मालासेरी में आपने म्हारो प्रणाम से राजस्थान के सोर्य की सराहना करते हुए यह भी कह देते कि मैं राजस्थानी भाषा को प्रणाम करते हुए उस को आठवीं अनुसूची में शामिल कर इन महापुरुषों और राजस्थान के जीवंत लोगों को प्रणाम करता हूं। प्रधानमंत्री जी राजस्थान की जनता आपसे अपनी भाषा का आग्रह कर रही है आप राजस्थानी भाषा को मान देंगे तो यह माना जाएगा कि उसकी संस्कृति का सम्मान कर रहे हैं उसके शौर्य का सम्मान कर रहे हैं। जितने भी यहां के महापुरुष हुए हैं, योद्धा हुए हैं सभी ने राजस्थानी भाषा में काम किया है। आपके पास राजनीति में काम करने वाले शीर्ष पदों पर आज भी राजस्थानी लोग बैठे हैं।

राजस्थानी लोगों के सहारे आप राजस्थान विधानसभा का चुनाव लड़ना चाहते हैं। राजस्थान की विधानसभा ने सर्वसम्मति से प्रस्ताव भेजा है आप उस प्रस्ताव पर गौर कर लीजि संविधान की आठवीं अनुसूची में राजस्थानी भाषा को शामिल कर लेंगे तो भगवान देवनारायण और आदिवासी समुदाय एवं राजस्थान में निवास करने वाले सभी समुदायों के लोग आपका प्रणाम स्वीकार करेंगे।

लेखक राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के कोषाध्यक्ष हैं।

–राजेन्द्र जोशी, बीकानेर
कवि-कथाकार

ज्यादा बारिश के कारण सांभर झील की नमक उत्पादन इकाइयों में काम ठप्प हुआ

सांभरझील, (निसं)। प्रदेश की सबसे बड़ी खारे पानी की लवणीय सांभर झील की नमक औद्योगिक इकाइयों में रविवार को हुई तेज बारिश से पानी भर जाने से नमक उत्पादन बंद हो गया है।

हर वर्ष नमक उत्पादन इकाइयों में नवम्बर से नमक का उत्पादन शुरू हो जाता है, इस वर्ष भी नवम्बर के बाद नमक उत्पादन कार्य शुरू हो गया। लेकिन जनवरी माह के अंत में बारिश के कारण नमक का उत्पादन एक माह तक बंद हो गया। जिससे यहां काम करने वाले स्थानीय तथा दूसरे राज्यों से आए हजारों श्रमिक बेरोजगार हो गए।

- **नमक उत्पादन बंद, एक माह के लिए श्रमिक हुए बेरोजगार**
- **बाहर से आए लोग अब यहां काम धंधा नहीं होने से अपने-अपने गांवों को लौट रहे हैं**

प्रदेश की सबसे बड़ी खारे पानी की लवणीय सांभर झील की नमक औद्योगिक इकाइयों में हुई तेज बारिश से क्यारियों में पानी भर जाने से नमक उत्पादन बंद हो गया।

बताया गया कि बाहर से आए लोग अब यहां काम धंधा नहीं होने से अपने-अपने गांवों को लौट रहे हैं, एक माह बाद फिर से मध्यप्रदेश सहित कई पड़ोसी राज्य के लोग यहां काम शुरू होने पर ही आ पाएंगे। रविवार को लगातार चौबीस घंटे से बारिश होने के बाद क्यारियों में बरसात का मीठा पानी एकत्रित हो जाने के चलते अब आगामी तीस दिनों तक नमक का उत्पादन नहीं हो सकेगा।

उल्लेखनीय है कि क्षेत्र में नवम्बर से नमक कार्य शुरू होने के लगभग दो माह तक बाद मौसम अनुकूल रहा। जिससे शीत ऋतु में करीब पचास प्रतिशत नमक उत्पादन हो गया है। हालांकि नमक उत्पादन ईकाइयों में अवैध बोरवेल और अतिक्रमण की कार्रवाई से भी नमक उत्पादन प्रभावित हुआ है। बारिश होने से सांभर झील के रास्तों में भी अब कीचड़ हो जाने से ट्रैक्टरों की आवाजाही नहीं हो सकेगी। जिससे आगामी कई दिनों तक नमक उत्पादन पूरी तरह से प्रभावित रहेगा।

नमक उत्पादकों ने बताया कि अब आगामी तीस दिनों तक नमक का उत्पादन नहीं होगा। आगामी दिनों में चटक धूप रहने के बाद ही नमक उत्पादन हो सकेगा। कहीं-कहीं कई क्यारियों में पड़ा नमक भी वर्षा के मीठे पानी से गल गया है।

दूल्हे द्वारा तोरण के शीर्षस्थ मोर या सुग्गे को स्पर्श करना अति प्राचीन परम्परा

पन्नालाल मेघवाल

- **तोरण का स्पर्श एक प्रकार से तोरण वन्दना है जिसे दूल्हा अपने दायें हाथ में रखी तलवार की नोक तोरण के शीर्षस्थ मोर या सुगे के स्पर्श करता है, जिसे तोरण या तोरण मारना कहा जाता है।**

विविधताओं से परिपूर्ण हमारे देश में जितने प्रान्त हैं, उतनी ही सांस्कृतिक विविधताएँ और उतने ही लोकरंग में रचे-बसे रीति-रिवाज हैं। तोरण द्वार जीवन की दैनिक दिनचर्या और पारिवारिक संस्कृति की घरेलू संवैधानिक पारम्परिक शैली है। विवाहोत्सव वाले घर के मुख्यद्वार पर तोरण स्थापित किया जाता है। तोरण लकड़ी से ही बनाया जाता है, जिसके शीर्ष पर मयूर अथवा सुग्गा बना होता है। तोरण के अन्दर और आसपास चिड़े बने होते हैं, जिनकी संख्या दो से ग्यारह तक होती है। तोरण पर फूल-पत्तियों का सुन्दर अलंकरण होता है। तोरण को हल्दी अथवा गेरू रंग से रंगा जाता है।

हमारे यहां मुख्य द्वार पर काष्ठ-निर्मित सजीले तोरण स्थापित करने की अति प्राचीन परंपरा है। विवाह के समय तोरण को मुख्य प्रवेश द्वार पर लटकाया जाता है जिसे दूल्हा हरी डाली, तलवार अथवा खाँडे से स्पर्श करता है। कहीं-कहीं तोरण मारने की एक विशेष डंडी बनी होती है जिसके ऊपर गोटा-किनारी लिपटी होती है।

राजस्थान में गृह प्रवेश द्वार के शीर्ष पर गणेश प्रतिमा की स्थापना की जाती है। गणेश रक्षा सूचक एवं मंगलकारी होने से पूजे जाते हैं। तोरण का स्पर्श एक प्रकार से तोरण वन्दना है जिसे दूल्हा अपने दायें हाथ में रखी तलवार की नोक तोरण के शीर्षस्थ मोर या सुग्गे के स्पर्श करता है, जिसे तोरण तोरण मारना कहा जाता है।

पारम्परिक सामाजिक दृष्टिकोण से पुत्र जन्म की खुशी के समान ही पुत्री जन्म को भी शुभ और मंगलकारी माना जाता है। पुत्री जन्म को घर में लक्ष्मी आगमन माना जाता है। इसलिए पुत्री के पितृ गृह पर ही तोरण सजता है। विवाह में लटकाया गया तोरण, द्वार पर तब तक लगा रहता है जबकि उसका स्थान दूसरा तोरण नहीं ले लेता। जब तोरण खराब हो जाता है तो उसे पानी में प्रवाहित कर दिया जाता है।

प्रदेश में कई जगह मुख्य द्वार पर काष्ठ निर्मित तोरण के स्थान पर माणक थम्भ स्थापित किए जाते हैं। इन माणक थम्भों की ऊँचाई 5 से 7 फीट होती है। आबू एवं केसरगंज में प्राय: ऐसे ही माणक थम्भों का प्रचलन है। ये प्राय: इमली की लकड़ी से बनते हैं। इस माणक थम्भों के शीर्ष पर लकड़ी का कलश रखा जाता है और शीर्ष पर मयूर बनाते हैं।

कई स्थानों पर मूर्ति प्रतिष्ठापना के समय भी माणक थम्भ स्थापित किये जाते हैं। तोरण शक्ति परीक्षण का प्रतीक है। प्राचीनकाल में राजा सैन्य बल द्वारा आक्रमण करके जीते हुए दुर्ग के शीर्ष द्वार को छूकर ही भीतर प्रवेश करते थे। उसी के सदृश दूल्हा भी राजकुमार के रूप में वधु के मुख्य द्वार पर लटके तोरण को मार कर अन्दर प्रवेश करता है। विवाह में दुल्हन को जीतकर लाना माना जाता है। तोरण मारते समय सही निशाना लगाने की क्षमता, तलवार ठीक से पकड़ पाने का सलीका, घोड़ी या किसी भी सवारी पर सम्पूर्ण नियंत्रण करने की क्षमता आदि परीक्षाएँ होती थी जिससे वर की शक्ति का परीक्षण होता था।

किसी भी वैवाहिक स्थल के मुख्य द्वार पर जब तक तोरण नहीं लटकता या बांधा नहीं जाता तब तक विवाह की रस्म का श्रीगणेश नहीं होता। भिन्न-भिन्न लोक-संस्कृति, रीति-रिवाज और रस्मों से जुड़े समस्त मंगल कामनाओं को व्यक्त करते काष्ठ-निर्मित रंगीले-सजीले ये तोरण हमारी वैवाहिक परम्परा और संस्कृति का एक ऐसा सशक्त, सजीव और प्रासंगिक प्रमाण है, इसके बिना परिणय-सूत्र में बंधना असंभव-सा जान पड़ता है।

आरंभ में कन्या के मुख्य द्वार पर टंगा तोरण महज लकड़ी का ढांचा नहीं अपितु कन्या पक्ष की आन-बान-शान प्रतीक था। पहले विवाहोत्सव की परंपरागत रस्में इत्मीनान से मनाई जाती थी। वर्तमान में लोगों के पास समय नहीं है। इसलिए प्राय: सजे-धजे विवाह स्थल किराए पर लेते हैं। इन विवाह स्थलों पर स्वस्तिक से बने तोरण से औपचारिकता पूरी की जाती है। धीरे धीरे तोरण लोक-संस्कृति एवं लोक-परम्परा का महत्व कम होता जा रहा है।

-पन्नालाल मेघवाल,
वरिष्ठ लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

मंगलवार 31 जनवरी, 2023

माघ मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2079, रोहिणी नक्षत्र रात्रि 12:39 तक, ब्रह्म योग दिन 10:58 तक, गर करण दिन 11:54 तक, चन्द्रमा वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-वृष, मंगल-वृष, बुध-धनु, गुरू-मीन, शुक्र-कुम्भ, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

कुमार और रवियोग रात्रि 12:39 तक है। भद्रा रात्रि 12:58 से बुधवार दिन 2:03 तक है। आज गुप्त नवरात्रा व्रत पारणा और नवरात्रोत्थापन, रोहिणी व्रत है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: चर 4:59 से 11:19 तक, लाभ-अमृत 11:19 से 2:01 तक, शुभ 3:22 से 4:42 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 7:17, सूर्यास्त 6:03

मेष
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

वृष
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति ठीक रहेगी। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

कर्क
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी और व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

कन्या
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

तुला
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

वृश्चिक
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

धनु
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा।

मकर
खान-पान के मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। व्यावसायिक मामलों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कुंभ
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।